राजदुलारी
रूप जी

कुमारी
राजदुलार
२४५

ॐ नमो भैरवाय ॥ ॐ व्याप्तचराचरभावविशेषं चिन्मय-
मेकमनन्तमनादिम् । भैरवनाथमनाथशरण्यं त्वन्म-
यचित्ततया हृदि वन्दे ॥१॥ त्वन्मयमेकमशेषमिदानीं
भाति मम त्वदनुग्रहशक्त्या । त्वं च महेश सदैव ममा-
त्मा स्वात्ममयं मम तेन समस्तम् ॥२॥ स्वात्मनि
विश्वगते त्वयि नाथे तेन न संसृतिभीतिकथास्ति ।
सत्स्वपि दुर्धरदुःखविमोहत्रासविधायिषु कर्म
गणेषु ॥३॥ अन्तक मां प्रति मा दृशमेनां क्रोध
करालतमां विदधीहि । शंकरसेवनचिन्तनधीरो
भीषणभैरवशक्तिमयोऽस्मि ॥४॥ इत्थमुपोढभवन्
मय संवित् दीधितिदारितभूरितमिस्रः । मृत्युय-
मान्तककर्मपिशाचैर्नाथ नमोस्तु न जातु बिभेमि
॥५॥ प्रोदितसत्यविबोधमरीचिप्रेक्षितविश्वपदा-
र्थसतत्त्वः । भावपरामृतनिर्भरपूर्णे त्वय्यह-
ऽऽत्मनि निर्वृतिमेमि ॥६॥ मानसगोचर [illegible]
दैव क्लेशदशा तनुतापविधात्री । नाथ [illegible]
मम त्वदभेदस्तोत्र[illegible]मृतवृष्टिरुदेति
[illegible]

तसि निर्वृत्तिधाराः ॥ ८ ॥ नृत्यति गायति हृष्यति
गाढं संविदियं मम भैरव नाथ त्वां प्रियमाप्य
सुदर्शनमेकं दुर्लभमन्यजनैः समयज्ञम् ॥
॥ ९ ॥ वसुरसपौषे कृष्णदशम्यामभिनव
गुप्तः स्तवमिदमकरोत् । येन विभुर्भवमरु
सन्तापं शमयति झडिति जनस्य दयालुः ॥
॥ १० ॥ इत्यभिनवगुप्ताचार्यकृता शिवस्तुति ॥ ॥

ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ अतिभीषण कटुभाषण
यमकिंकर पटले । कृतताडनपरिपीडन मर
णागमसमये ॥ उमया सह मम चेतसि यमशा
सन निवसन् । शिव० ॥ १ ॥ अतिदुर्णय चटुल
न्द्रियरिपुसञ्चयदलिते । पविककर्शकटु
जल्पित खलगर्हण चलिते ॥ शिवया सह मम
चेतसि शशिशेखर निवसन् । शिव० ॥
भवमहाम भरर ... खलवचन पुरुष
... मानि ...

श्वर भयहरन् । शिव० ॥३॥ प्राक्कृत पाप सन क्रतु पात-
सन चतुराश्रम विषये । कलि विग्रह भवदुर्ग्रह
नृपदुर्बल समये द्विजक्षत्रिय वनिताशिशु द-
रकम्पित हृदये ॥ शिव० ॥४॥ भवसंभवविधि
धामय परिपीडित वपुषम् । तनयात्मज
ममताभर कलुषीकृत हृदयं कुरु मां निज
चरणार्चन निरतं भव सततं ॥ शिव० ॥५॥

पुष्पाणि सन्तु तव देव ममेन्द्रियाणि
धूपो गुरुर्वपुरिदं हृदयं प्रदीपः । प्राणा
हवींषि करणानि तवाक्षताश्च पूजाफलं
व्रजतु सांप्रतमेष जीवः ॥१॥ वांछामि
नाहमपि सर्वधनाधिपत्यं न स्वर्गभूमिमच-
लां न पदं विधातुः । भूयो भवामि यदि ज-
न्मनि जन्मनि स्यां त्वत्पादपंकजतल स-
न्मकरन्द भृंगी ॥२॥ जन्मानि सन्तु [illegible]
[illegible] ॥
[illegible]

पिते चरणारविंदा न्नापैतु मे हृदयं मीश्वरा
नमो नमस्ते ॥३॥ ॥ ॥ ॥

ॐ जय शिव ओंकारा स्वामि हर भज ओंकारा।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्धाङ्गी गौरा ॐ हर
हर हर महादेव ॥१॥ एकानन चतुराणन
पंचाननभ्राजे। हंसासन गरुडासन वृष
वाहन साजे॥ॐ हर०॥२॥ दो भुज चार
चतुर भुज दस भुज त्वं सोहै। तीनों एक
स्वरूपा त्रिभुवन मन मोहै॥ॐ हर०॥
॥३॥ करमध्ये करमंडल चक्र त्रिशूल धरता।
दुःख हरता सुख करता जगपालन करते
ॐ हर०॥४॥ अक्ष माला रुंड माला वनमा-
लाधारी। चन्दन मृगमधुलेपन भाले शशि
धारी। ॐ हर०॥५॥ पीताम्बर पीतांबर
सनकादिक पीपलादिक भक्त
अङ्गी। ॐ हर०॥६॥ गायत्री

अर्धाङ्गी शिव गौरी सङ्गी। ॐ हर०॥७॥
सच्चिदानन्द स्वरूपा त्रिभुवन के राजा। चारों
वेद उचारत सुख देवन काजा॥ ॐ हर०॥८॥
बांगदतूर के भोजन भस्मे में वासा। पार्वती
पर्वत में राजत शम्भु कैलासा॥ ॐ हर०॥९॥
ब्रह्मा विष्णु सदा शिव अन्तर ना करसो।
शिव
हर हर जपते ब्रह्मा। शिव जपते वि-
ष्णु भवसागर तरसो॥ ॐ हर०॥१०॥
हाथों में कंकन कानों में कुण्डल गल
मोतियन माला। जटों में गंगा विराजत
ओढ़त मृगछाला॥ ॐ हर०॥११॥ चौं-
सठ जोगन मंगल गावत निरत करत
भैरउ। बाजे ताल मृदङ्ग अरु बाजत
डुमरू॥ ॐ हर०॥१२॥ काशी में विश्वनाथ
विराजत नन्दी ब्रह्मचारी। नि[illegible]
भोग लगावत महिमा अधिका[illegible] २॥
[illegible] ॥१४॥ त्रिगुण [illegible] नन्द [illegible]

निशदिन जो गावे। भणत शिवानन्द
स्वामी मन इच्छा फल पावे॥ ॐ हर०॥४॥

ॐ जय नारायण जय पुरुषोत्तम जय
वामन कंसारे उद्धर मामसुरेशविना-
शिन् पतितोऽहं संसारे। घोरं हर मम
नरकरिपो केशव कल्मषभारं मामनु-
कम्पय दीनमनाथं कुरु भवसागर पा-
रम्॥१॥ जय जय देव जयासुरसूदन
जय केशव जय विष्णो जय लक्ष्मी मु-
ख कमल मधुव्रत जय दशकन्धर राजि-
ष्णो॥ घोर०॥२॥ त्वं जननी जनकः प्र-
भुरच्युत त्वं पुत्र सुहृद्धनमित्रम्।
त्वं शरणं शरणागत वत्सल त्वं भव
जलधि वहित्रम्॥ घोर०॥३॥
पुनरपि जननं पुनरपि मरणं
पुनरपि गर्भनिवासं। घोर

मलं पुनरस्मिन् माधव मामुद्धर नि-
जदासम् ॥ घोर० ॥ ४ ॥ जनकसुतापति
चरणपरायण शंकर मुनिवरगीतम्। धारय
मनसि कृष्ण पुरुषोत्तम वारय संसृति भी-
तिम् ॥ घोर० ॥ ५ ॥ यद्यपि सकलमहं कल-
यामि हरे नहि किमपि सतत्वं। तदपि
न मुञ्चति मामिदमऽच्युत पुत्रकलत्र
ममत्वम् ॥ घोर० ॥ ६ ॥ इति विष्णुस्तुतिः ॥

ॐ सजलजलदनीलं दर्शितोदारशीलं।
करतलधृतशैलं वेणुवाद्यैरसालम् ॥
व्रजजनकुलपालं कामिनीकेलिलो-
लं। तरुणतुलसिमालं नौमि गोपा-
लबालम् ॥ घोर पयोमिथ ...
... हास्य कटाक्षवंसीनि-
नादं ॥ श्यामल सुन्दर नित्य ॥

विलासं। स्तं प्रणमामि च बालगोपालं ॥
कुण्डल मण्डित कर्ण कपोलं। कुन्द-
निसेवित नीलनिचोलं॥ ~~उ~~
उज्ज्वल कङ्कण बाहु विशालम्।
स्तं०॥ केशिनि सूदन कंसविनाशन्।
तालवने नव धेनुक नाशं। देवकी
नन्दन् सुन्दर कृष्णं। स्तं०॥ गोगिरि
धारन गोकुल तारं। चन्दन चर्चित
लोचन हारं। नील कलेवर शोभित-
हारं॥ स्तं०॥ गोप वधू जन मोहन
कामं। बाहुविभञ्जित केयूरहारं।
श्री मधुमाधव बालचरित्रं॥ स्तं०॥
श्री रघुनन्दन गोपिणी कान्तं।
[illegible]मनोरथ सिद्धि [illegible] नितान्तं

श्रीरघुनन्दन हरमे पापं ॥स्तं०॥ केलिकु-
तूहल कङ्कुम शीलं गोपिशिक यामिणी
नाथक नाथं । मल्लनि पातक मुष्टिक
घातं ॥ स्तं० ॥ गोपालस्तोत्रमिदं पुन्यं
यः पठेत्सततं नरः । सर्वान कामवा-
प्नोते अन्ते विष्णुस्तनूमलभेत् ॥
इति गौतमे तंत्रे श्री गोपालस्तोत्रं
संपूर्णम् ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

शिवाष्टक ॥ जय त्रिपुराङ्कर, जय गङ्गाधर, करुणाकर
करतार हरे, जय कैलाशी, जय अविनाशी, सुखराशी
सुखसार हरे । जय शशी शेखर, जय डमरू धर, जय
जय प्रेमागार हरे, जय त्रिपुरारी, जय [illegible] हारी
अमित, अनन्त, अपार हरे ॥ निर्गुण जय जय
[illegible] निराकार, [illegible] हरे । [illegible]
[illegible] दातार हरे ॥

मल्लिकार्जुन, सोमनाथ जय, महाकाल, ओङ्कार
हरे। त्र्यम्बकेश्वर, जय घुश्मेश्वर, भीमेश्वर जगतार
हरे, काशी पति श्रीविश्वनाथ जय, मङ्गल मय,
अघ हार हरे॥ नीलकण्ठ जय, भूतनाथ जय, [illegible]
[illegible] मृत्युञ्जय अविकार हरे।
पारवती पति०॥२॥ जय महेश, जय जय भवेश,
जय आदि देव महादेव विभो, किस मुखसे हे गुणातीत, प्रभु
तव अपार गुण वर्णन हो। जय भवकारक, ता-
रक, हारक, पातक दारक शिव शंभो,
दीन दुःखहर, सर्व सुखाकर, प्रेम सुधाधर की
जय हो॥ पार लगादो भवसागर से, बनकर
कर्णाधार हरे। पारवती पति०॥३॥ जय
मन भावन, जय अति पावन, शोक नशा-
वन शिव शंभो, विपद विदारण, अधम
उधारन, सत्य सनातन शिव शंभो। सहज
वचन हर, जलज नयन वर, धवल वरन
तन शिव शंभो, मदन कदन कर, [illegible]
[illegible] हर, चरन [illegible] धन शिव [illegible]
[illegible]

हरे। पारवती पति०॥४॥ भोलानाथ कृपालु दयामय, औढर दानी शिव योगी, निमिष मात्रमें देते हैं, नवनिधि मनमानी शिव योगी। सरल हृदय अति, करुणा सागर अकथ कहानी शिव योगी, भक्तों पर सर्वस्व लुटाकर बने मसानी शिवयोगी॥ स्वयं अकिञ्चन, जन मन रञ्जन, परशिव, परम उदार हरे। पारवती पति०॥५॥ आशुतोष इस मोहमयी निद्रा से मुझे जगा देना, विषम वेदनासे विषयों की मायाधीश छुड़ा देना। रूप सुधाकी एक बूँदसे जीवन मुक्त बनादेना, दिव्य ज्ञान भण्डार युगल चरणों की लगन लगा देना॥ एक बार इस मन मन्दिरमें, कीजे पद सञ्चार हरे। पारवती पति०॥६॥ दानी हे, दे भिक्षा में अपनी अन पायनी भक्ति प्रभो, [illegible] हो, दे अविचल निष्काम [illegible] स्वामी हो, दो इ[illegible] [illegible]॥

हो, दो तुम अपने चरणों में अनुरक्ति प्रभो॥
स्वामी हो, निज सेवक की सुन लेना करुण
पुकार हरे। पारवती पति०॥८॥ तुम बिन
बेकल हूँ, प्राणेश्वर आ जाओ भगवन्त हरे,
चरण शरण की बांह गहो हे उमारमण
प्रिय कन्त हरे। विरह व्यथित हूँ, दीन दुखी
हूँ, दीन दयालु अनन्त हरे, आओ तुम मेरे
हो जाओ, आ जाओ श्री मन्त हरे॥ मेरी
इस दयनीय दशा पर कुछ तो करो वि-
चार हरे। पारवती पति०॥९॥ ॥ ॥ ॥

॥ भवान्यष्टकम् ॥

न तातो न माता न बन्धुर्न दाता, न पुत्रो न पुत्री न भृत्यो न
भर्ता। न जाया न विद्या न वृत्तिर्ममैव गतिस्त्वं गति-
स्त्वं त्वमेका भवानि ॥१॥ भवाब्धावपारे महादुःखभी-
रुः, पपात प्रकामी प्रलोभी प्रमत्तः। कुसंसार
पाशप्रबद्धः सदाहम्। गतिस्त्वं०॥२॥ न जानामि
दानं न च ध्यान योगं, न जानामि [illegible] न जानामि
[illegible]म्। न [illegible] जानामि पूजां [illegible] न जानामि
न [illegible] ॥३॥ न [illegible]

न जानामि मुक्तिं लयं वा कदाचित। न जानामि
भक्तिं व्रतं वापि मात, गतिस्त्वं०॥ ४॥ कुकर्मी कु[illegible]
कुबुद्धिः कुदासः कुला चार हीनः कदाचारलीनः।
कुदृष्टिः कुवाक्य प्रबन्धः सदाहम्। गतिस्त्वं०॥
५॥ प्रजेशं रमेशं महेशं सुरेशं, दिनेशं निशी
थेश्वरं वा कदाचित्। न जानामि चान्यत् सदाहं
[illegible]रण्ये। गतिस्त्वं०॥ ६॥ विवादे विषादे प्रमादे
[illegible]वासे, जले चानले पर्वते शत्रुमध्ये। अरण्ये
[illegible]रण्ये सदा मां प्रपाहि। गतिस्त्वं॥ ७ ॥
[illegible] दरिद्रो जरारोगयुक्तो, महा क्षीण
[illegible] दीनः सदा जाड्य वक्त्रः॥ विपत्तौ
प्रविष्टः प्रणष्टः सदाहम्। गतिस्त्वं [illegible]
त्वमेको भवानि [illegible]॥
[illegible]ति श्री [illegible]

[illegible]सम्पूर्ण[illegible]

AGI, B.A., L.T.

हो, दो तुम अपने चरणों में अनुरक्ति प्रभो॥ स्वामी हो, निज सेवक की सुन लेना करुण पुकार हरे। पारवती पति०॥८॥ तुम बिन बेकल हूँ, प्राणेश्वर आ जाओ भगवन्त हरे, चरण शरण की बाँह गहो हे उमारमण प्रिय कन्त हरे। विरह व्यथित हूँ, दीन दुखी हूँ, दीन दयालु अनन्त हरे, आओ तुम मेरे हो जाओ, आ जाओ श्रीमन्त हरे॥ मेरी इस दयनीय दशा पर कुछ तो करो विचार हरे। पारवती पति०॥[illegible]॥ ॥ ॥ ॥

॥ भवान्यष्टकम् ॥

न तातो न माता न बन्धुर्न दाता, न पुत्रो न पुत्री न भृत्यो न भर्ता। न जाया न विद्या न वृत्तिर्ममैव गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥१॥ भवाब्धावपारे महा[illegible] पपात प्रकामी [illegible] प्रमत्तः। [illegible] प्रबद्धः सदाहम्। गतिस्त्वं०॥२॥ न जानामि दानं न च ध्यान योगं, न जानामि [illegible] न जानामि [illegible] न जानामि पूजां [illegible] न [illegible]

[illegible] ॥३॥ न [illegible]

न जानामि मुक्तिं लयं वा कदाचित। न जानामि भक्तिं व्रतं वापि मात, गतिस्त्वं०॥ ४॥ कुकर्मी कुसंगी कुबुद्धिः कुदासः कुलाचार हीनः कदाचारलीनः। कुदृष्टिः कुवाक्य प्रबन्धः सदाहम्। गतिस्त्वं०॥ ५॥ प्रजेशं रमेशं महेशं सुरेशं, दिनेशं निशीथेश्वरं वा कदाचित्। न जानामि चान्यत् सदाहं शरण्ये। गतिस्त्वं०॥ ६॥ विवादे विषादे प्रमादे प्रवासे, जले चानले पर्वते शत्रुमध्ये। अरण्ये शरण्ये सदा मां प्रपाहि। गतिस्त्वं०॥ ७॥ [illegible] अनाथो दरिद्रो जरारोगयुक्तो, महाक्षीण दीनः सदा जाड्य वक्त्रः। विपत्तौ प्रविष्टः प्रणष्टः सदाहम्। गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेको भवानि [illegible]॥

इति श्री [illegible] भवान्यष्टकं सम्पूर्णम्

[illegible] GI, B.A. L.T.

नल प्रवर परमधाम न्ब्रह्मविष्णु महेश्वर रूप
सृष्टिस्थिति संहार कारक भ्रूमध्य निलय तेजो-
ऽसि धामासि महात्मन ओं तत्सत २ ओं हंसः
शुचिषद्वसुरन्तरिक्ष सद्धोता वेदिषदतिथिर्दुरो-
णसत् नृषद्वरसदृत सद्व्योम सद०जा गोजा
ऋतजा अद्रिजा ऋतम परम्ब्रह्म सुरूप
सर्वागत सर्व शक्ते सर्वेश्वर सर्वग्रन्थि भेद
कुरु कुरु परम पदं परामर्शी ब्रह्मद्वार मुक्ती
कुमार्गी जहि षाठ्कोशिकं शरीरं त्यजमभेरे
शुद्धोऽसि बुद्धोऽसि विमलोऽसि क्षमस्व रेती
मा सादय स्वाहा॥ ओं हंसो नगराय नमो-
प्रोक्तो हंस आत्मेति निश्चितम। स एवा-
... भगवान्विष्णुस्तद्ब्रह्म सर्वगम॥
... [illegible] ... स्वामियों प्रातः को ...
... [illegible] ...
... वमेको ... [illegible] ... ति परमें स्थान ...
... [illegible] ... ने ... [illegible] ...
... क्रांग्री [illegible] द्वा ... समाप्त ... इति

P.N. 8

श्रीः

भवानीनामसहस्रस्तोत्रम् ।

इन्द्राक्षीस्तोत्रं
गौरीदशकम

सम्पादक
सर्वानन्द चरागी बी. ऐ. एल. टी.
संशोधितं
श्री स्वामी विद्याधर जी महाराज

राज दुलारी
खर



Raj Dulari
Char

Shree Bhawani Sahasranam

Edited by

S.N. CHARAGI, B.A., L.T.

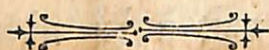
1995.

1st Edition 1000. Price 0-2-0

ॐ

अथ

भवानीनामसहस्रस्तोत्रम् ।



ॐ नमो भवान्यै

ॐ नमो भगवत्यै ।

ॐ शङ्खत्रिशूलशरचापकरां त्रिनेत्रां
तिग्मेतरांशुकलया विकसत्किरीटाम् ।
सिंहस्थितामसुरसिद्धनुतां च दुर्गां
दूर्वानिभां दुरितदुःखहरीं नमामि ॥ १ ॥
अकुलकुलपतन्ती चक्रमध्ये स्फुरन्ती
मधुरमधुपिबन्ती कण्टकान्भक्षयन्ती ।
दुरितमपहरन्ती साधकान्पोषयन्ती
जयति जगति देवी सुन्दरी क्रीडयन्ती ॥ २॥
चतुर्भुजामेकवक्त्रां पूर्णेन्दुवदनप्रभाम् ।
खड्गशक्तिधरां देवीं वरदाभयपाणिकाम् ॥३॥
प्रेतसंस्थां महारौद्रीं भुजगेनोपवीतिनीम् ।
भवानीं कालसंहारबद्धमुद्राविभूषिताम् ॥ ४ ॥

जगत्स्थितिकरीं ब्रह्मविष्णुरुद्रादिभिः सुरैः ।
स्तुतां तां परमेशानीं नौम्यहं विघ्नहारिणीम् ।५।

ॐनमो भवान्यै ।

कैलासशिखरे रम्ये देवदेवं महेश्वरम् ।
ध्यानोपरतमासीनं प्रसन्नमुखपङ्कजम् ॥ ६ ॥
सुरासुरशिरोरत्नरञ्जितांघ्रियुगं प्रभुम् ।
प्रणम्य शिरसा नन्दी बद्धाञ्जलिरभाषत ।७।

श्रीनन्दिकेश्वर उवाच ।

देवदेव जगन्नाथ संशयोस्ति महान्मम ।
रहस्यमेकमिच्छामि प्रष्टुं त्वां भक्तिवत्सल ॥ ८॥
देवतायास्त्वया कस्याः स्तोत्रमेतद्दिवानिशम् ।
पठ्यतेऽविरतं नाथ ! त्वत्तः किमपरं महत् ॥९॥
इति पृष्टस्तदा देवो नन्दिकेन जगद्गुरुः ।
प्रोवाच भगवानेको विकसन्नेत्रपङ्कजः ॥ १० ॥

श्रीभगवानुवाच ।

साधु साधु गणश्रेष्ठ पृष्टवानसि मां च यत् ।
स्कन्दस्यापि च यद्गोप्यं रहस्यं कथयामि तत् ।११।
पुरा कल्पक्षये लोकान्सिसृक्षुर्मूढचेतना ।
गुणत्रयमयी शक्तिर्मूलप्रकृतिसंज्ञिता ॥ १२ ॥

तस्यामहं समुत्पन्नस्तत्वैस्तैर्महदादिभिः ।
चेतनेति ततः शक्तिर्मां काप्यालिङ्ग्य तस्थुषी ।
हेतुः सङ्कल्पजालस्य मनोधिष्ठायिनी शुभा ।
इच्छेति परमा शक्तिरुन्मिमील ततःपरम् ।१४।
ततो वागिति विख्याता शक्तिः शब्दमयी परा ।
प्रादुरासीज्जगन्माता वेदमाता सरस्वती ।१५।
ब्राह्मी च वैष्णवी रौद्री कौमारी पार्वती शिवा ।
सिद्धिदा बुद्धिदा शान्ता सर्वमङ्गलदायिनी ।१६।
तयैतत्सृज्यते विश्वमनाधारं च धार्यते ।
तयैतत्पाल्यते सर्वं तस्यामेव प्रलीयते ॥१७॥
अर्चिता प्रणता ध्याता सर्वभावविनिश्चिता ।
आराधिता स्तुता सैव सर्वसिद्धिप्रदायिनी ।१८।
तस्या अनुग्रहादेव तामेव स्तुतवानहम् ।
सहस्रैर्नामभिर्दिव्यैस्त्रैलोक्यप्राणिपूजितैः ॥१९॥
स्तवेनानेन सन्तुष्टा मामेव प्रविवेश सा ।
तदारभ्य मया प्राप्तमैश्वर्यं पदमुत्तमम् ॥२०
तत्प्रभावान्मया सृष्टं जगदेतच्चराचरम् । २
ससुरासुरगन्धर्वयक्षराक्षसमानवम् ॥ २
"सपन्नगं ससमुद्रं सशैलवनकाननम् हा" ।
सराशिग्रहनक्षत्रं [illegible]

नन्दिन्नामसहस्रेण स्तवेनानेन सर्वदा ।
स्तुवे परापरां शक्तिं ममानुग्रहकारिणीम् ।२३।
इत्युक्तोपरतं देवं चराचरगुरुं विभुम् ।
प्रणम्य शिरसा नन्दी प्रोवाच परमेश्वरम् ।२४।

श्रीनन्दिकेश्वर उवाच ।

भगवन्देवदेवेश लोकनाथ जगत्पते ।
भक्तोस्मि तव दासोस्मि प्रसादः क्रियतां मयि ।
देव्याः स्तवमिमं पुण्यं दुर्लभं यत्सुरैरपि ।
श्रोतुमिच्छाम्यहं देव प्रभावमपि चास्य तु ॥२६॥

श्रीभगवानुवाच ।

शृणु नन्दिन्महाभाग स्तवराजमिमं शुभम् ।
सहस्रैर्नामभिर्दिव्यैः सिद्धिदं सुखमोक्षदम् ।२७।
शुचिभिः प्रातरुत्थाय पठितव्यं समाहितैः ।
त्रिकालं श्रद्धया युक्तैर्नातः परतरः स्तवः ॥२८॥

ॐ अस्य श्रीभवानीनामसहस्रस्तवराजस्य
...महादेवऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, आद्या शक्तिः, भ
भुवनेश्वरी देवता, ह्रीं बीजं, श्रीं शक्तिः, क्लीं की...
...मो वाङ्मनःकायोपार्जितपापनिवारणा...
विनियोगः ॥ अथ

न्यासः ॥ ॐ एकवीरायै अङ्गुष्ठाभ्यां नमः ॐ महामायायै तर्जनीभ्यां नमः, ॐ पार्वत्यै मध्यमाभ्यां नमः, ॐ गिरिशप्रियायै अनामिकाभ्यां नमः, ॐ गौर्यै कनिष्ठिकाभ्यां नमः, ॐकरालिन्यै करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ अथ षडङ्गन्यासः ॥ ॐ एकवीरायै हृदयाय नमः, ॐ महामायायै शिरसे स्वाहा, ॐ पार्वत्यै शिखायै वषट्, ॐ गिरिशप्रियायै कवचायहुम्, ओं गौर्यै नेत्रत्रयाय वौषट्, ओं करालिन्यै अस्त्रायफट् ॥ प्राणायामः ॥ ध्यानम् ॥

बालार्कमण्डलाभासं
चतुर्बाहुं त्रिलोचनाम् ।
पाशांकुशशरांश्चापं
धारयन्तीं शिवां भजे ॥ १ ॥

ओ अर्धेन्दुमौलिममलाममराभिवन्द्या-
मम्भोजपाशसृणिरक्तकपालहस्ताम् ।
रक्ताङ्गरागरशनाभरणां त्रिनेत्रां
ध्याये शिवस्य वनितां मधुविह्वलाङ्गीम् ॥२

बीजत्रयाय विद्महे तत्प्रधानाय धीमहि, तन्नः शक्ति प्रचोदयात् ॥ ३ ॥ मूलम् ।

"ह्रींश्रींश्रींऊोंऊोंह्रींश्रींश्रीं [illegible] नि हुं फट् स्वाहा", ।

॥ श्रीइश्वर उवाच ॥

ओं महाविद्या जगन्माता महालक्ष्मी शिवप्रिया ।
विष्णुमाया शुभा शान्ता सिद्धा सिद्धसरस्वती ॥
क्षमा कान्तिः प्रभा ज्योत्स्ना पार्वती सर्वमङ्गला ।
हिङ्गुला चण्डिका दान्ता पद्मा लक्ष्मीर्हरिप्रिया ॥
त्रिपुरानन्दिनी नन्दा सुनन्दा सुरवन्दिता ।
यज्ञविद्या महामाया वेदमाता सुधाधृतिः ॥
प्रीतिप्रिया प्रसिद्धा च मृडानी विन्ध्यवासिनी ।
सिद्धविद्या महाशक्तिः पृथ्वी नारदसेविता ॥
पुरुहूतप्रिया कान्ता कामिनी पद्मलोचना ।
प्रह्लादिनी महामाता दुर्गा दुर्गतिनाशिनी ॥
ज्वालामुखी सुगोत्रा च ज्योतिः कुमुदहासिनी ।
दुर्गमा दुर्लभा विद्या स्वर्गतिः पुरवासिनी ॥
अपर्णा शाम्बरी माया मदिरा मृदुहासिनी ।
कुलवागीश्वरी नित्या नित्यक्लिन्ना कृशोदरी ॥
कामेश्वरी च नीला च भीरुण्डा वह्निवासिनी ।
लम्बोदरी महाकाली विद्याविद्येश्वरी तथा ॥
नरेश्वरी च सत्या च सर्वसौभाग्यवर्धिनी ।
सङ्कर्षणी [illegible] दरी ॥

कात्यायनी च चम्पा च सर्वसम्पत्तिकारिणी ।
नारायणी महानिद्रा योगनिद्रा प्रभावती ॥
प्रज्ञापारमिता प्रज्ञा तारा मधुमती मधु ।
क्षीरार्णवसुता हाला कालिका सिंहवाहना ॥
ओंकारा च सुधाहारा चेतना कोपना कृतिः ।
अर्धबिन्दुधरा धीरा विश्वमाता कलावती ॥
पद्मावती सुवस्त्रा च प्रबुद्धा च सरस्वती ।
कुण्डासना जगद्धात्री बुद्धमाता जिनेश्वरी ॥
जिनमाता जिनेन्द्रा च शारदा हंसवाहना ।
राज्यलक्ष्मीर्वषट्कारा सुधाकारासुधात्मिका ॥
राजनीतिस्त्रयीवार्ता दण्डनीतिः क्रियावती ।
सद्भूतिस्तारिणी श्रद्धा सद्गतिः सत्परायणा ॥
सिन्धुर्मन्दाकिनी गङ्गा यमुना च सरस्वती ।
गोदावरी विपाशा च कावेरी च शतह्रदा ॥
सरयूश्चन्द्रभागा च कौशिकी गण्डकी शुचिः ।
नर्मदा कर्मनाशा च चर्मण्वत्यथ देविका ॥
वेत्रवती वितस्ता च वरदा नरवाहना ।
सती पतिव्रता साध्वी सुचक्षुः कुण्डवासिनी ॥
स्थूलैकचक्षुः सहस्राक्षी सुश्रोणिर्भगमालिनी ।

सेनाश्रेणिः पताका च सुव्यूहा यूद्धकाङ्क्षिणी ॥
पताकिनी दयारम्भा विपञ्ची पञ्चमप्रिया ।
परापरकलाक्रान्ता त्रिशक्तिर्मोक्षदायिनी ।
ऐन्द्री माहेश्वरी ब्राह्मी कौमारी कुलवासिनी ।
इच्छा भगवती शक्तिः कामधेनुः कृपावती ॥
वज्रायुधा वज्रहस्ता चण्डी चण्डपराक्रमा ।
गौरी सुवर्णवर्णा च स्थितिसंहारकारिणी ॥
एकानेका महेज्या च शतबाहुर्महाभुजा ।
भुजङ्गभूषणा भूषा षट्चक्रक्रमवासिनी ॥
षट्चक्रभेदिनी शूरा कायस्था कायवर्जिता ।
सुस्मिता सुमुखी क्षामा मूलप्रकृतिरीश्वरी ॥
अजा च बहुवर्णा च पुरुषार्थप्रवर्तिनी ।
रक्ता नीला सिता श्यामा कृष्णा पीता च कर्बुरा ।
क्षुधा तृष्णा जरा वृद्धा तरुणी करुणालया ॥
कला काष्ठा मुहूर्ता च निमेषा कालरूपिणी ।
सुवर्णरसनानासा चक्षुःस्पर्शवती रसा ।
गन्धप्रिया सुगन्धा च सुस्पर्शा च मनोगतिः ।
मृगनाभिर्मृगाक्षी च कर्पूरामोदधारिणी ।
पद्मयोनिः सुकेशी च सुलिङ्गा भगरूपिणी ॥

योनिमुद्रा महामुद्रा खेचरी खगगामिनी ।
मधुश्रीर्माधवीवल्ली मधुमत्ता मदोद्धता ॥
मातङ्गी शुकहस्ता च पुष्पबाणेक्षुचापिनी ।
रक्ताम्बरधरा क्षीबा रक्तपुष्पावतंसिनी ॥
शुभ्राम्बरधरा धीरा महाश्वेता वसुप्रिया ।
सुवेणी पद्महस्ता च मुक्ताहारविभूषिणा ॥
कर्पूरामोदनिःश्वासा पद्मिनी पद्ममन्दिरा ।
खड्गिनी चक्रहस्ता च भुसण्डी परिघायुधा ॥
चापिनी पाशहस्ता च त्रिशूलवरधारिणी ।
सुबाणा शक्तिहस्ता च मयूरवरवाहना ॥
वरायुधधरा वीरा वीरपानमदोत्कटा ।
वसुधा वसुधारा च जया शाकम्भरी शिवा ॥
विजया च जयन्ती च सुस्तनी शत्रुनाशिनी ।
अन्तर्वत्नी वेदशक्तिर्वरदा वरधारिणी ॥
शीतला च सुशीला च बालग्रह विनाशिनी ।
कौमारी च सुपर्णा च कामाख्या कामवन्दिता ॥
जालन्धरधराऽनन्ता कामरूपनिवासिनी ।
कामबीजवती सत्या सत्यधर्मपरायणा ॥
स्थूलमार्गस्थिता सूक्ष्मा सूक्ष्मबुद्धिप्रबोधिनी ।

षट्कोणा च त्रिकोणा त्रिनेत्रा त्रिपुरसुन्दरी ॥
वृषप्रिया वृषारूढा महिषासुरघातिनी ।
सुम्भदर्पहरा दीप्ता दीप्तपावकसन्निभा ॥
कपालभूषणा काली कपालमालधारिणी ।
कपालकुण्डला दीर्घा शिवदूती घनध्वनिः ॥
सिद्धिदा बुद्धिदा नित्या सत्यमार्गप्रबोधिनी ।
कम्बुग्रीवा वसुमती च्छत्रच्छायाकृतालया ॥
जगद्गर्भा कुण्डलिनी भुजगाकारशायिनी ।
प्रोल्लसत्सप्तपद्मा च नाभिनालमृणालिनी ॥
मूलाधारा निराकारा वह्निकुण्डकृतालया ।
वायुकुण्डसुखासीना निराधारा निराश्रया ॥
श्वासोच्छ्वासगतिर्जीवग्राहिणी वह्निसंश्रया ।
वल्लीतन्तुसमुत्थाना षड्रसास्वादलोलुपा ॥
तपस्विनी तपःसिद्धिस्तपसः सिद्धिदायिनी ।
तपोनिष्ठा तपोयुक्ता तापसी च तपःप्रिया ॥
सप्तधातुमयी मूर्तिः सप्तधात्वन्तराश्रया ।
देहपुष्टिर्मनःपुष्टिरन्नपुष्टिर्बलोद्धता ॥
ओषधिर्वैद्यमाता च द्रव्यशक्तिः प्रभावती ।
वैद्या वैद्यचिकित्सा च सुपथ्या रोगनाशिनी ॥

मृगया मृगमांसादा मृगत्वङ्मृगलोचना ।
वागुरा बन्धरूपा च वधरूपा वधोद्धता ॥
वन्दी वन्दिस्तुताकारा गारबन्धविमोचिनी ।
शृङ्खला खलहा विद्युद्दृढबन्धविमोचिनी ॥
अंबिकाबालिका चाम्बा स्वक्षा साधुजनार्चिता ।
कौलिकी कुलविद्या च सुकुला कुलपूजिता ॥
कालचक्रभ्रमिर्भ्रान्ता विभ्रमा भ्रमनाशिनी ।
वात्याली मेगमाला च सुवृष्टिः सस्यवर्धिनी ॥
अकारा च इकारा च उकारैकाररूपिणी ।
ह्रींकारीबीजरूपा च क्लींकाराम्बरवासिनी ॥
सर्वाक्षरमयीमूर्तिरक्षरा वर्णमालिनी ।
सिन्दूरारुणवर्णा च सिन्दूरतिलकप्रिया ॥
वश्या च वश्यबीजा च लोकवश्यविभाविनी ।
नृपवश्या नृपै सेव्या नृपवश्यकरी प्रिया ॥
महिषी नृपमान्या च नृमान्या नृपनन्दिनी ।
नृपधर्ममयी धन्या धनधान्यविवर्धिनी ॥
चतुर्वर्णमयी मूर्तिश्चतुर्वर्णैश्चपूजिता ।
सर्वधर्ममयी सिद्धिश्चतुराश्रमवासिनी ॥
ब्राह्मणी क्षत्रिया वैश्या शूद्रा ऽवरवर्णजा ।

वेदमार्गरता यज्ञा वेदिर्विश्वविभाविनी ॥
अस्त्रशस्त्रमयीविद्या वरशस्त्रास्त्रधारिणी ।
सुमेधा सत्यमेधा च भद्रकाल्यऽपराजिता ॥
गायत्री सत्कृतिः सन्ध्या सावित्री त्रिपदाश्रया ।
त्रिसन्ध्या त्रिपदी धात्री सुपर्वा सामगायनी ॥
पाञ्चाली बालिका बाला बालक्रीडा सनातनी ।
गर्भाधारधरा शून्या गर्भाशयनिवासिनी ॥
सुरारिघातिनी कृत्या पूतना च तिलोत्तमा ।
लज्जा रसवती नन्दा भवानी पापनाशिनी ॥
पट्टाम्बरधरा गीतिः सुगीतिर्ज्ञानलोचना ।
सप्तसुरमयी तन्त्री षड्जमध्यमदैवता ॥
मूर्छना ग्रामसंस्थाना स्वच्छस्वस्थानवासिनी ।
अट्टाट्टहासिनी प्रेता प्रेतासननिवासिनी ॥
गीतनृत्तप्रिया कामा तुष्टिदा पुष्टिदा क्षया ।
निष्ठा सत्यप्रिया प्रज्ञा लोकेशी च सुरोत्तमा ॥
सुविषा ज्वालिनीज्वाला विषमोहार्त्तिनाशिनी ।
[illegible]षारिर्नागदमनी कुरुकुल्याऽमृतोद्भवा ॥
भूतभीतिहरा रक्षा भूतावेशविनाशिनी ।
रक्षोघ्नी [illegible]सीरात्रिर्दीर्घनिद्रा दिवागतिः ॥

चन्द्रिका चन्द्रकान्तिश्च सूर्यकान्तिर्निशाचरी ।
डाकिनी शाकिनी शिष्या हाकिनी चक्रवाकिनी
सितासितप्रिया स्वङ्गा सुकुला वनदेवता ।
गुरुरूपधरा गुर्वी मृत्युर्मारी विशारदा ॥
महामारी विनिन्द्रा च तन्द्रा मृत्युविनाशिनी ।
चन्द्रमण्डलसङ्काशा चन्द्रमण्डलवासिनी ॥
अणिमादिगुणोपेता सुस्पृहा कामरूपिणी ।
अष्टसिद्धिप्रदा प्रौढा दुष्टदानवघातिनी ॥
अनादिनिधना पुष्टिश्चतुर्बाहुश्चतुर्मुखी ।
चतुःसमुद्रशयना चतुर्वर्गफलप्रदा ॥
काशपुष्पप्रतीकाशा शरत्कुमुदलोचना ।
भूता भव्या भविष्या च शैलजा शैलवासिनी ॥
वाममार्गरता वामा शिववामाङ्गवासिनी ।
वामाचारप्रिया तुष्टिर्लोपामुद्राप्रबोधिनी ॥
भूतात्मा परमात्मा च भूतभव्यविभाविनी ।
मङ्गला साधुशीला च परमार्थप्रबोधिका ॥
दक्षिणा दक्षिणामूर्तिः सुदक्षिणा हरिप्रसूः ।
योगिनी योगयुक्ता च योगाङ्गा ध्यानशालिनी ॥
योगपट्टधरा मुक्ता मुक्तानां परमागतिः ।

नारसिंही सुजन्मा च त्रिवर्गफलदायिनी ॥
धर्मदा धनदा चैका कामदा मोक्षदा द्युतिः ।
साक्षिणी क्षणदा दत्ता दत्तजा कोटिरूपिणी ॥
क्रतुः कात्यायनी स्वच्छा स्वच्छन्दा च कविप्रिया ।
सत्यागमा बहिःस्था च काव्यशक्तिः कवित्वदा ॥
मेनापुत्री सतीमाता मैनाकभगिनी तडित् ।
सौदामिनी सुदामा च सुदामा धामशालिनी ॥
सौभाग्यदायिनी द्यौश्च सुभगा द्युतिवर्धिनी ।
श्रीकृत्तिवसना चैव कङ्काली कलिनाशिनी ॥
रक्तबीजवधोद्दृप्ता सुतन्तुर्बीजसन्ततिः ।
जगज्जीवा जगद्बीजा जगत्त्रयहितैषिणी ॥
चामीकररुचिश्चान्द्री साक्षया षोडशीकला ।
यत्तत्पदानुबन्धा च यक्षिणी धनदार्चिता ॥
चित्रिणी चित्रमाया च विचित्रा भुवनेश्वरी ।
चामुण्डा मुण्डहस्ता च चण्डमुण्डवधोद्धुरा ॥
अष्टम्येकादशी पूर्णा नवमी च चतुर्दशी ।
अमा कलशहस्ता च पूर्णकुम्भपयोधरा ॥
अभीरुर्भैरवी भीरुर्भीमा त्रिपुरभैरवी ।
महारुण्डा च रौद्री च महाभैरवपूजिता ॥

निर्मुण्डा हस्तिनी चण्डा करालदशनानना ।
कराला विकराला च घोरा घुर्घुरनादिनी ॥
रक्तदन्तोर्ध्वकेशी च बन्धूककुसुमारुणा ।
कादम्बरी पटासा च काश्मीरी कुङ्कुमप्रिया ॥
क्षान्तिर्बहुसुवर्णा च रतिर्बहुसुवर्णदा ।
मातङ्गिनी वरारोहा मत्तमातङ्गगामिनी ॥
हंसा हंसगतिर्हंसी हंसोज्ज्वलशिरोरुहा ।
पूर्णचन्द्रमुखी श्यामा स्मितास्या श्यामकुन्तला ॥
मषी च लेखनी लेखा सुलेखा लेखकप्रिया ।
शङ्खिनी शङ्खहस्ता च जलस्था जलदेवता ॥
कुरुक्षेत्रावनिः काशी मथुरा काञ्च्यवन्तिका ।
अयोध्या द्वारिकामाया तीर्था तीर्थकरप्रिया ॥
त्रिपुष्कराऽप्रमेया च कोशस्था कोशवासिनी ।
कौशिकी तु कुशावर्ता कोशाम्बी कोशवर्धिनी ॥
कोशदा पद्मकोशाक्षी कुसुम्भकुसुमप्रिया ।
तोतुला च तुलाकोटिः कोटिस्था कोटराश्रया ॥
स्वयम्भूश्च सुगुप्ता च सुरूपा रूपवर्धिनी ।
तेजस्विनी सुभिक्षा च बलदा बलदायिनी ॥
हमाकोशी महावर्त्ता बुद्धिः सदसदात्मिका ।

महाग्रहहरा सौम्या विशोका शोकनाशिनी ॥
सात्त्विकी सत्त्वसंस्था च राजसी च रजोवृता ।
तामसी च तमोयुक्ता गुणत्रयविभाविनी ॥
अव्यक्ता व्यक्तरूपा च वेदविद्या च शाम्भवी ।
शम्भुकल्याणिनी कल्पा मनःसङ्कल्पसन्ततिः ॥
सर्वलोकमयी शक्तिः सर्वश्रवगोचरा ।
सर्वज्ञानवती वाञ्छा सर्वतत्त्वावबोधिनी ॥
जाग्रती च सुषुप्तिश्च स्वप्नावस्था तुरीयका ।
त्वरा मन्दगतिर्मन्दा मदिरामोदधारिणी ॥
पानभूमिः पानपात्रा पानदानकरोद्यता ।
अघूर्णारुणनेत्रा च किञ्चिदव्यक्तभाषिणी ॥
आशापूरा च दीक्षा च दक्षा दीक्षितपूजिता ।
नागवल्ली नागकन्या भोगिनी भोगवल्लभा ॥
सर्वशास्त्रवती विद्या सुस्मृतिर्धर्मवादिनी ।
श्रुतिः स्मृतिधरा ज्येष्ठा श्रेष्ठा पातालवासिनी ॥
मीमांसा तर्कविद्या च सुभक्तिर्भक्तवत्सला ।
सुनाभिर्यातना जातिर्गम्भीराऽभाववर्जिता ॥
नागपाशधरा मूर्तिरगाधा नागकुण्डला ।
सुचक्रा चक्रमध्यस्था चक्रकोणनिवासिनी ॥

सर्वमन्त्रमयी विद्या सर्वमन्त्राक्षरावलिः ।
मधुस्रवा स्रवन्ती च भ्रामरी भ्रमरालका ॥
मातृमण्डलमध्यस्था मातृमण्डलवासिनी ।
कुमारजननी क्रूरा सुमुखी ज्वरनाशिनी ॥
अतीता विद्यमाना च भाविनी प्रीतिमञ्जरी ।
सर्वसौख्यवती युक्तिराहारपरिणामिनी ॥
निधानं पञ्चभूतानां भवसागरतारिणी ।
अक्रूराच ग्रहवती विग्रहा ग्रहवर्जिता ॥
रोहिणी भूमिगर्भा च कालभूः कलवर्तिनी ।
कलङ्करहिता नारी चतुष्षष्ट्यभिधावती ॥
जीर्णा च जीर्णवस्त्रा च नूतना नववल्लभा ।
अजरा च रतिः प्रीतिरतिरागविवर्धिनी ॥
पञ्चवातगतेर्भिन्ना पञ्चश्लेष्माशयाधरा ।
पञ्चपित्तवती पङ्क्तिः पञ्चस्थानविभाविनी ॥
ऋतुमती कामवती बहिःप्रस्रविणी त्र्यहा ।
रजःशुक्रधराशक्तिर्जरायुर्गर्भधारिणी ॥
त्रिकालज्ञा त्रिलिङ्गा च त्रिमूर्तिः पुरवासिनी ।
अरागा शिवतत्त्वा च कामतत्त्वानुरागिणी ॥
प्राच्यवाची प्रतीचीदिगुदीचीदिग्विदिग्दिशा ।

अहंकृतिरहंकारा बलिमाया बलिप्रिया ॥
स्रुक्स्रुवा सामिधेनी च सुश्रद्धा श्राद्धदेवता ।
माता मातामही तृप्तिः पितृमाता पितामही ॥
स्नुषा दौहित्रिणी पुत्री पौत्री नप्त्री शिशुप्रिया ।
स्तनदा स्तनधारा च विश्वयोनिः स्तनन्धयी ॥
शिशूत्सङ्गधरा दोला दोलाक्रीडाभिनन्दिनी ।
उर्वशी कदली केका विशिखा शिखिनर्तिनी ॥
खट्वाङ्गधारिणी खट्वा बाणपुङ्खानुवर्तिनी ।
लक्ष्यप्राप्ति करालक्ष्या लक्ष्या च शुभलक्षणा ॥
वर्तिनी सुपथाचारा परिखा च खनिर्वृतिः ।
प्राकारवलया वेला मर्यादा च महोदधौ ॥
पोषणी शोषणीशक्तिर्दीर्घकेशी सुलोमशा ।
ललिता मांसला तन्वी वेदवेदाङ्गधारिणी ॥
नरासृक्पानमत्ता च नरमुण्डास्थिभूषणा ।
अक्षक्रीडारतिः शारी शारिका शुकभाषिणी ॥
शाम्बरी गारुडीविद्या वारुणी वरुणार्चिता ।
वाराही तुण्डहस्ता च दंष्ट्रोद्धृतवसुन्ध[illegible]
[illegible]नमूर्तिधरा मूर्त्ता वदान्या [illegible] ॥
अष्टमूर्तिर्निधीशा च शा[illegible] [illegible]धा ।
[illegible] शुचिः

स्मृतिः संस्काररूपा च सुसंस्कारा च संस्कृतिः ।
प्राकृता देशभाषा च गथा गीतिः प्रहेलिका ॥
इडा च पिङ्गला पिङ्गा सुषुम्णा सूर्यवाहिनी ।
शशिस्रवा च तालुस्था काकिनी मृतजीविनी ॥
अणुरूपा बृहद्रूपा लघुरूपा गुरुस्थिरा ।
स्थावरा जङ्गमादेवी कृतकर्मफलप्रदा ॥
विषयाक्रान्तदेहा च निर्विशेषा जितेन्द्रिया ।
विश्वरूपा चिदानन्दा परंब्रह्मप्रबोधिनी ॥
निर्विकारा च निर्वैरा विरतिः सत्त्ववर्धिनी ।
पुरुषाज्ञानभिन्ना च क्षान्तिः कैवल्यदायिनी ॥
विविक्तसेविनी प्रज्ञा जनयित्री बहुश्रुतिः ।
निरीहा च समस्तेहा सर्वलोकैकसेविता ॥
सेवा सेवाप्रिया सेव्या सेवाफलविवर्धिनी ।
कलौकल्किप्रिया काली दुष्टम्लेच्छविनाशिनी ॥
प्रत्यञ्चा च धनुर्यष्टिः खड्गधारा दुरानतिः ।
अश्वप्लुतिश्च वल्गा च सृणिः सन्मत्तवारुणा ॥
वीरभूर्वीरमाता च वीरसूर्वीरनन्दिनी ।
जयश्रीर्जयदीक्षा च जयदा जयवर्धिनी ॥
सौभाग्यसुभगाकारा सर्वसौभाग्यवर्धिनी ।

क्षेमङ्करी सिद्धिरूपा सत्कीर्तिः पथिदेवता ॥
सर्वतीर्थमयीमूर्तिः सर्वदेवमयीप्रभा ।
सर्वसिद्धिप्रदाशक्तिः सर्वमङ्गलमङ्गला ॥ १००० ॥

पुण्यं सहस्रनामेदमम्बाया रुद्रभाषितम् । चतुर्वर्गप्रदं सत्यं नन्दिकेन प्रकाशितम् ॥ नातः परतरो मन्त्रो नातः परतरः स्तवः । नातः परतरा विद्या तीर्थं नातः परात्परम् ॥ ते धन्याः कृतपुण्यास्ते त एव भुवि पूजिताः । एकभावं मुदा नित्यं येर्चयन्ति महेश्वरीम् ॥ देवतानां देवता या ब्रह्माद्यैर्या च पूजिता । भूयात्सा वरदा लोके साधूनां विश्वमङ्गला ॥ एतामेव पुराराध्यां विद्यां त्रिपुरभैरवीम् । त्रैलोक्यमोहनं रूपमकार्षीद्भगवद्धरिः ॥

इतिश्रीरुद्रयामले तन्त्रे नन्दिकेश्वरसंवादे महाप्रभावो भवानीनामसहस्रस्तवराजः समाप्तः ॥



अथ इन्द्राक्षीस्तोत्रम् ॥

ॐ अस्य श्रीइन्द्राक्षीस्तोत्रमन्त्रस्य, पुरन्दर ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीइन्द्राक्षीभगवती देवता, ह्रीं बीजं, भुवनेश्वरी शक्तिः, माहेश्वरी कीलकं, गायत्री सावित्री सरस्वती कवचं, आत्मनो वाङ्मनःकायोपार्जितपापनिवारणार्थं अमुककामनासिद्ध्यर्थे पाठे विनियोगः ॥ लक्ष्म्यै अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, भुवनेश्वर्यै तर्जनीभ्यां नमः, माहेश्वर्यै मध्यमाभ्यां नमः, वज्रहस्तायै अनामिकाभ्यां नमः, सहस्रनयनायै कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ इन्द्राक्षीभगवत्यै करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ इति करन्यासः ॥ अथ षडङ्गन्यासः लक्ष्म्यै हृदयाय नमः, भुवनेश्वर्यै शिरसे स्वाहा, माहेश्वर्यै शिखायै वषट्, वज्रहस्तायै कवचाय हुं, सहस्रनयनायै नेत्राभ्यां वौषट्, इन्द्राक्षीभगवत्यै अस्त्राय फट् ॥ प्राणायामः ॥ ध्यानम् ॥

ॐ इन्द्राक्षीं द्विभुजां देवीं पीतवस्त्रधरां शुभाम् ।
वामे वज्रधरां सव्यहस्तेऽभयवरप्रदाम् ॥
सहस्रनेत्रां सूर्याभां नानालङ्कारभूषिताम् ।
प्रसन्नवदनां नित्यामप्सरोगणसेविताम् ॥

श्रीदुर्गां सौम्यवदनां पाशाङ्कुशधरां पराम् ।
त्रैलोक्यमोहिनीं देवीं भवानीं प्रणमाम्यहम् ॥
ॐ ह्रीं श्रीं इंद्राक्षी श्रीं ऐं स्वाहा

इन्द्र उवाच ॥

इन्द्राक्षी नाम सा देवी देवता समुदाहृता ।
गौरी शाकम्भरी देवी दुर्गानाम्नेति विश्रुता ॥
कात्यायनी महादेवी चण्डघण्टा महातपा ।
सावित्री सा च गायत्री ब्रह्माणी ब्रह्मवादिनी ॥
नारायणी भद्रकाली रुद्राणी कृष्णपिङ्गला ।
अग्निज्वाला रुद्रमुखी कालरात्री तपस्विनी ॥
मेघश्यामा सहस्राक्षी विष्णुमाया जलोदरी ।
महोदरी मुक्तकेशी घोररूपा महाबला ॥
आनन्दा भद्रजानन्ता रोगहर्त्री शिवप्रिया ।
शिवदूती कराली च प्रत्यक्षपरमेश्वरी ॥
इन्द्राणी चन्द्ररूपा च इन्द्रशक्तिः परायणा ।
महिषासुरसंहर्त्री चामुण्डा गर्भदेवता ॥
वाराही नारसिंही च भीमा भैरवनादिनी ।
श्रुतिः स्मृतिर्धृतिर्मेधा विद्या लक्ष्मीः सरस्वती ॥
अनन्त विजया पूर्णा मनस्तोषाऽपराजिता ।
भवानी पार्वती दुर्गा हैमवत्यम्बिका शिवा ॥

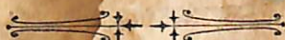
शिवा भवानी रुद्राणी शङ्करार्धशरीरिणी ॥
एतैर्नामपदैर्दिव्यैः स्तुता शक्रेण धीमता ।
आयुरारोग्यमैश्वर्याऽक्षयसम्पत्तिकारकम् ॥
क्षयापस्मारकुष्ठादितापज्वरनिवारकम् ।
शतमावर्तयेद्यस्तु मुच्यते व्याधिबन्धनात् ॥
आवर्तयेत्सहस्रेण लभते वाञ्छितं फलम् ।
राजा वशमवाप्नोति सत्यमेव न संशयः ॥
लक्षमेकं जपेद्यस्तु साक्षाद्देवीं स पश्यति ।
त्रिकालं पठते नित्यं धनधान्यांश्च सम्पदा ॥
अर्धरात्रे पठेन्नित्यं मुच्यते व्याधिबन्धनात् ।
ऐन्द्रस्तोत्रमिदं पुण्यं जपे तु फलवर्धनम् ॥
विनाशाय तु रोगाणामपमृत्युं हरत्युत ।
राज्यार्थी लभते राज्यं धनार्थी विपुलं धनम् ॥
इच्छाकामं तु कामार्थी धर्मार्थी धर्ममव्ययम् ।
विद्यार्थी लभते विद्यां मोक्षार्थी परमं पदम् ॥
इन्द्रेण कथितं स्तोत्रं सत्यमेव न संशयः ॥



इति श्री इन्द्राक्षीस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

श्रीदुर्गां सौम्यवदनां पाशाङ्कुशधरां पराम् ।
त्रैलोक्यमोहिनीं देवीं भवानीं प्रणमाम्यहम् ॥
ॐ ह्रीं श्रीं इंद्राक्षी श्रीं ऐं स्वाहा
इन्द्र उवाच ॥
इन्द्राक्षी नाम सा देवी देवता समुदाहृता ।
गौरी शाकम्भरी देवी दुर्गानाम्नेति विश्रुता ॥
कात्यायनी महादेवी चण्डघण्टा महातपा ।
सावित्री सा च गायत्री ब्रह्माणी ब्रह्मवादिनी ॥
नारायणी भद्रकाली रुद्राणी कृष्णपिङ्गला ।
अग्निज्वाला रुद्रमुखी कालरात्री तपस्विनी ॥
मेघश्यामा सहस्राक्षी विष्णुमाया जलोदरी ।
महोदरी मुक्तकेशी घोररूपा महाबला ॥
आनन्दा भद्रजानन्ता रोगहर्त्री शिवप्रिया ।
शिवदूती कराली च प्रत्यक्षपरमेश्वरी ॥
इन्द्राणी चन्द्ररूपा च इन्द्रशक्तिः परायणा ।
महिषासुरसंहर्त्री चामुण्डा गर्भदेवता ॥
वाराही नारसिंही च भीमा भैरवनादिनी ।
श्रुतिः स्मृतिर्धृतिर्मेधा विद्या लक्ष्मीः सरस्वती ॥
अनन्त विजया पूर्णा मनस्तोषाऽपराजिता ।
भवानी पार्वती दुर्गा हैमवत्यम्बिका शिवा ॥

शिवा भवानी रुद्राणी शङ्करार्धशरीरिणी ॥
एतैर्नामपदैर्दिव्यैः स्तुता शक्रेण धीमता ।
आयुरारोग्यमैश्वर्याऽक्षयसम्पत्तिकारकम् ॥
क्षयापस्मारकुष्ठादितापज्वरनिवारकम् ।
शतमावर्तयेद्यस्तु मुच्यते व्याधिबन्धनात् ॥
आवर्तयेत्सहस्रेण लभते वाञ्छितं फलम् ।
राजा वशमवाप्नोति सत्यमेव न संशयः ॥
लक्षमेकं जपेद्यस्तु साक्षाद्देवीं स पश्यति ।
त्रिकालं पठते नित्यं धनधान्यांश्च सम्पदा ॥
अर्धरात्रे पठेन्नित्यं मुच्यते व्याधिबन्धनात् ।
ऐन्द्रस्तोत्रमिदं पुण्यं जपे तु फलवर्धनम् ॥
विनाशाय तु रोगाणामपमृत्युं हरत्युत ।
राज्यार्थी लभते राज्यं धनार्थी विपुलं धनम् ॥
इच्छाकामं तु कामार्थी धर्मार्थी धर्ममव्ययम् ।
विद्यार्थी लभते विद्यां मोक्षार्थी परमं पदम् ॥
इन्द्रेण कथितं स्तोत्रं सत्यमेव न संशयः ॥



इति श्री इन्द्राक्षीस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

गौरीदशकम्

ॐ नमो देव्यै भवान्यै वागीश्वर्यै ॥

ॐ लीलारब्धस्थापितलुप्ताखिललोकां ।
लोकातीतैर्योगिभिरन्तर्हृदि भाव्याम् ।
बालादित्यश्रेणिसमानद्युतिपुञ्जां ।
गौरीमम्बामम्बुरुहाक्षीमहमीडे ॥ १ ॥
आशापाशक्लेशविनाशं विदधानां ।
पादाम्भोजध्यानपराणां पुरुषाणाम् ।
ईशीमीशार्धाङ्गहरां त्वामभिरामां गौरीमम्बा० ॥२॥
चन्द्रापीडानन्दितमन्दस्मितवक्त्रां ।
चन्द्रापीडालङ्कृतलोलालकभाजाम् ।
इन्द्रोपेन्द्राद्यर्चितपादाम्बुजयुग्मां गौरीमम्बा० ॥३॥
प्रत्याहारध्यानसमाधिस्थितिभाजां ।
नित्यं चित्ते निर्वृत्तिकाष्ठां कलयन्तीम् ।
सत्यज्ञानानन्दमयीं त्वां तनुमध्यां गौरीमम्बा० ॥४॥
आदिक्षान्तमक्षरमूर्त्या विलसन्तीं ।
भूते भूते भूतकदम्बप्रसवित्रीं ।
शब्दब्रह्मानन्दमयीं त्वां तनुमध्यां गौरीम० ॥५॥
नानाकारैः शक्तिकदम्बैर्भुवनानि ।

व्याप्य स्वैरं क्रीडति यासु स्वयमेका ।
कल्याणीं त्वां कल्पलतामाऽऽनतिभाजां गौरीम० ।६।
यस्यामेतत्प्रोतमशेषं मणिमाला ।
सूत्रे यद्वत्कापि चरं चाप्यचरं च ।
त्वामऽध्यात्मज्ञाणपदव्यागमनीयां गौरीम० ॥७॥
यस्याः कुक्षौ लीनमऽखण्डं जगदऽण्डं ।
भूयो भूयाः प्रादुरभूदऽत्तरमेव ।
भर्त्रा सार्धं त्वां स्फटिकाद्रौ विहरन्तीं गौरीम० ॥८॥
मूलाधारादुत्थितवन्तीं विधिरन्ध्रं ।
सौरं चान्द्रं धाम विहाय ज्वलिताङ्गीम् ।
स्थूलां सूक्ष्मां सूक्ष्मतरां त्वामऽभिवन्द्यां गौरीम०।९।
नित्यः सत्यो निष्कल एकोजगदीशः ।
साक्षी यस्याः सर्गविधौ संहरणे च ।
विश्वत्राणक्रीडनशीलां शिवपत्नीं गौरीम० ।१०।
प्रातः काले भावविशुद्धि प्रदधाना ।
नित्यं भक्त्या जल्पति गौरीदशकं यः ।
वाचां सिद्धिं सम्पदमुच्चैः शिवभक्तिं ।
तस्याऽवश्यं पर्वतपुत्री विदधाति ॥ ११ ॥
इति श्रीशङ्कराचार्यविरचितं गौरीदशकं

सम्पूर्णम् ॥

ॐ

मंगलं दिशतु मे महा गुरुः ।
मंगलं दिशतु मे सरस्वती ।
मंगलं दिशतु मे विनायको ।
मंगलं दिशतु मे षडानन ।
मंगलं दिशतु मे दिवाकरो ।
मंगलं दिशतु मे निशाकरः ।
मंगलं दिशतु मे महीसतो ।
मंगलं दिशतु मे शशांकजः ।
मंगलं दिशतु मे गिरांपति ।
मंगलं दिशतु मेपि भार्गवः ।
मंगलं दिशतु मे शनैश्चरो ।
मंगलं दिशतु मे विधुन्तुदः ।
मंगलं दिशतु मे ऽनलातमजो ।
मंगलं दिशतु मे जनार्दनः ।
मंगलं दिशतु मे महेश्वरो ।
मंगलं दिशतु मे महेश्वरी ।

इति श्री राजानक विद्याधर जी महाराज रचितं मङ्गलस्तोत्रं सम्पूर्णम ॥

Published by
TRUST PUBLISHING HOUSE
Shalayar. Habba Kadal SRINAGAR.

Stockists of their Publications

Shree Krishna Wani, Part I. By S.K. Toshakhani, M. A.		0—3—0
Shree Krishna Wani Part II. By S.N. Charagi, B.A. L.T.		0—4—0
Shree Rama Wani Part I. By S.N. Charagi, B.A. L.T.		0—3—0
Shree Bhawani Sahasranam By S.N. Charagi, B.A. L.T.		0—2—0
Nitya Karam Vidhi By S.N. Charagi, B.A. L.T.		0—1—6
Life of Nund Rishi By P. Aftab Koul		0—2—0
Panchastavi in Urdu		0—1—0
Davistotra	By P. Rugh Nath	0—1—0

Note:-Reasonable commission is given to booksellers)

Durga Press Srinagar

नागेन्द्र हाराय त्रिलोचनाय भस्मा-
ङ्गरागाय महेश्वराय ।
देवाधिदेवाय दिगम्बराय
तस्मै नकाराय नमः शिवाय ॥१॥
मातङ्ग चर्माम्बर भूषणाय
संस्तुत गीर्वाण गणार्चिताय ।
त्रैलोक्य नाथाय पुरान्तकाय
तस्मै मकाय० ॥२॥ शिवा-
मुखाम्भोज विकासनाय
दक्षस्य यज्ञस्य विनाशका-
राय । चन्द्रार्क वैश्वानर-
लोचनाय तस्मै शिकारा-
य० ॥३॥ वसिष्ठ कुम्भो-
द्भव गौतमादि मुनीन्द्र वन्द्या
[illegible]
[illegible] वृषध्वजाय तस्मै वकारा-

[illegible] वी प्रथमः ।

[illegible]

पूर्णतो कुरुते नीतविश्वजनकपास्द्वा

ता । इत्येवं न पुनः स्पृशन्ति

जबनीर्गभैर्तकात्वबनयः॥ 2

दृष्ट्वा सम्भ्रमकारि वस्तु सहसा

ऐरे इति व्याहृते । येनामृतनशो

वरद बिन्दुं विबन्धयस्मान्नरचापि

[illegible] तश्चाजातो [illegible]

3

[illegible] सुकृतिरत्नमेव [illegible]

[illegible]

ॐ

यः सत्ये । मम कामराजमपरं

मन्त्राक्षरं निष्कलं । तत्सारस्वतमित्यवैति

विरलः कश्चिद्बुधश्चेद्भुवि । आख्यानं

प्रतिपर्व सत्यतपसो यत्कीर्तयन्तो

द्विजाः । प्रारम्भे

प्रणवास्पदप्रणयितां नीत्वोच्चरन्ति

स्फुटम् ॥४॥ यत्सद्यो वचसां

प्रवृत्तिकरणे दृष्टप्रभावं बुधैः ।

तार्तीयीकं ... [illegible]

ॐ प प

सर्वो वौऽपि सरस्वतीसुगतो ।

जाड्याम्बुधि [illegible] ये । ८

गोशब्दो गिरि वर्तते सुनियतं

योगं विना सिद्धिदः ॥ ९ ॥

एकैकं तव देवि बीज मनघं

सव्यञ्जनाव्यञ्जनं । कूटस्थं यदि वा

पृथक्क्रमगतं यद्वा स्थितं व्युत्क्रमात्

यस्य [illegible] यं येन विधिना

केनापि [illegible] चिन्तितं

ॐ

समस्त मृगाम ॥८॥

वामे पुस्तकपाशि सीमयै

सस्त्रज दक्षिणो । भक्तमेयो ।

वरदाभेपापाकरां कर्पूरखुन्दुउज्वला ॥

ङ्गजूम्भाम्बुजपत्र ... तनयन सित

... प्रभालोकिनी । ये ... पद्मामम्बा

... प्रीलयानित्यनस... कवि

... त: ॥७॥ ये ... पामाद ...

... पदा ... पमा । सि ... नी

ॐ

[illegible] त्र [illegible] न्तो विकटस्फुटाक्षरपदा

[illegible] निर्यान्ति वक्त्राम्बुजा ।

॥ [illegible]

तेषां भारति भारती सुरसरित्कल्लोललो[illegible]

ये सिन्दूरपरागपुञ्जपिहितां

त्वन्मूर्तिमाभावये । सुधां वीपि

विलीनस्वच्छ[illegible]धारसारमयीमि[illegible]

परयन्ति श्री[illegible]सम्प्रत्यमन्ये [illegible] सतवास्ते [illegible]

[illegible]निका [illegible] तिकुरजलेवरां [illegible]

[illegible] नव [illegible] रागाश्रवा [illegible] नीवितः [illegible]

ॐ

का च्वीसजं । येतवो [illegible] चेतसि

तद्वते श्यामपि ध्यायन्ति कृष्णका

सितिम ।। तेषां वेश्मसुविभ्रमबहर

[illegible] रीम [illegible] यथि । माधवेन्दु सुरकरीजातो

स्यैर्य भजन्तोश्रि ।। १ ।। अर्भरया

शशिरवर डमरि डतजटाजूटां नमुराडस्रजं ।

[illegible] चन्दकप्रसवारुराम्बरधरो

प्रेताब्जनाधासिनीम् । ताव ध्यायन्ति

चतुर्भुजां सितनाभा [illegible] नीं ।

ॐ

जातो [illegible] वदे क्षितिभुजां सामान्यमात्रे

कुले । नि[illegible] शाषावनिनक्रवर्तिपदवीं [illegible]

प्रताप्तोह्यनः ॥ यद्द्वियांपर वृन्दवन्दितपद

[illegible] जो [illegible] ॥ द्वेविन्वव्व[illegible]रराम्भुज प्रसा तिज

सोयंप्रसादोदय: ॥ १२ ॥ [illegible] परिह ।

त्वद्वरस्यार[illegible]भुजार्वनाविधौ किंवा दलोल्लुराठन ।

त्रत्यत्करारकरादिभिः परिचयं येषां न [illegible] जग्मुः

[illegible]मः ॥ ते दराडांकुश चक्रचापकुलिशाग्रविल[illegible]

[illegible]

पातरा[illegible] ॥ २३ ॥

६० ॐ

विप्राः शिवं शौरि [illegible] जो विशार [illegible] से ॥ २२ ॥

श्रीरा [illegible] वासवौ । स्तवां देवि त्रिपुरे ।

परापरमयी [illegible] प्रजाविधौ ॥ यांया

[illegible] यत्ते [illegible] यां [illegible] त्वं [illegible]

तां तां [illegible] विधौ [illegible] ॥ २४ ॥

शब्दानां जननी त्वमत्र भुवने

वाग्वादिनीत्युच्यसे । त्वत्तः

केशव [illegible] तयोऽप्यत्र [illegible] भवन्ति [illegible] ॥

[illegible] रसे

काचिदचिन्त्यरूपमहिमा शक्तिः परागीयसे
देवानां त्रितयं त्रयी हुतभुजां शक्ति त्रयं
त्रस्वराः । त्रैलोक्यं त्रिपदी त्रिपुष्करमयो
त्रिब्रह्म वर्णास्त्रयः ॥ यत्किंत्रिजगति त्रिधा
नियमितं वस्तु त्रिवर्गात्मकं । तत्सर्वं
त्रिपुरेति नामभगवत्यन्वेति ते तत्वतः ॥२६॥
लक्ष्मीं राजकुले जयां रणमुवि क्षेमंकरीमध्वनि ।
क्रव्यादद्विपसर्पभाजि शावरीं कान्तारदुर्गेगिरौ ॥
भूतप्रेतपिशाचजम्बुकभये स्मृत्वा
मा ... । ... त्रिपुरां ...

म म ॐ प प प

नोयमवे ॥२७॥ | माया कुण्डलिनी क्रिया

मधुमती काली कला मालिनी । मातङ्गी

य य स स

विजया जया भगवती देवी शिवा शाम्भवी ॥

शक्तिः शङ्करवल्लभा त्रिनयना वाग्वादिनी भैरवी ।

ह्रीङ्कारी त्रिपुरा परापरमयी माता कुमारीत्यसि ॥२८॥

आईपल्लवितैः परस्परयुतैर्द्वित्रिक्रमाद्यक्षरैः ।

काद्यैः क्षान्तगतैः स्वरादिभिरथो क्षान्तैश्च तैः सस्वरैः ।

नामानि त्रिपुरे । भवन्ति खलु ॥

यान्यत्यन्तरहस्यानि ते ॥ तेभ्यो

भैरवपत्नि विश्वमिस डस्केभ्यः



यक्षस्वरूपाय जटाधराय
पिनाकहस्ताय सनातनाय
नित्याय शुद्धाय निरञ्जनाय
तस्मै यकाराय नम॥

ॐ

रास्त लागय पोशि लव रटे।।

सतिये कोतुय किताबुवलर।।

पोकलम किरिचु छुनि प्रार्थि सत्ययो।।

वीव प्रास्तु द्राय रत्य रत्य गण।।

बुल बा बस्वख महागण पत्ययो।।

सतिये।। यजुया सत्य कच यथि

सरस्वतिये।। वन वन मज

वासना द्राव।। प्रावं नाव

ॐ

ॐ मन्त्र प्रारब्ध।। क्या सत्य सती।।

नमना पादन गंडहोय सुन।।

चूतीश्वर वरने श्राध राज्ञ। भवाने।।

सातिये०।। हिंगला त मशाना बेद्र कु

श्राये।। ब्रह्मा करान जोस दार पूज।।

दारस श्ररग जोध पोस लाग हि [illegible] सातिये।।

सातिये०।। आला लोम्बोदर व्यषि गण

[illegible] पापूर कुम पोप [illegible]

पातिये।।

[illegible] हामि नालि काशि वन वुन

[illegible] सातिये०।। श्रकिन [illegible] शोवाय

[illegible] ।। [illegible] सौ स उमापि

करनव जाव ॥ लोछ चानि जनकुन ...
कुस यतिये ॥ सतिये० ॥
सोम्बरित दीवीत दीवता यतिये ॥
ब्रह्मा त ब्रह्मप वीद पोरन ॥
लंगनस दिचहस ब्रगस सतियो ॥
सतिये० ॥ त्रिसन्ध्या गनन सन्ध्या स्र
सतिये ॥ वसिष्ठ त महा र्ध्यप्रा किय
सवि मान यतिये ॥ सतिये० ॥
... सन्ध्या सतिये ॥ ...
... ...
वसिष्ठ त महा र्ध्यप्रा किय सविदान
यतिये ॥ सतिये० ॥ कुय राजु वुखान
ब्रून्टप त पतिये ॥ रप ...
मोवानि रुट वासि कुरि जाय ॥

ॐ

अग्रस कुनचु अग्ण दार यातिये॥

सातियेवा॰ ब्रह्मा नीद परानब्रुन्यत्

पातिये॥ संड़ करीन आये बड़ कौह्री

राम जुव बरवे आव सीता अवाने॥

सातिये॰॥ कृष्ण जुवन अवतार

टोरुन यतिये॥ राधा वरवे मड़

दारिका नन्द गोपुन गर आसुत कुॅ

यतिये॥ सातिये॰॥ राज़ सोन बोड़

बान अपोर सोन्दर्ये॥ प्रीतता

॥ ततहा स्वया कार॥

श्री ॐ

लछमन जुव वने आव मदमा

वनिथे ॥ सनिथे० ॥

विश्वामित्रन म्युल करित

च्युतये ॥ राजा दशरथ गर द्युय

आय ह्रमरथ राज़ वने आव

मगवनिथे ॥ सनिथे० ॥ दशरथ

नति माल बरथ दारी ॥

सन तु सामान बय करान ॥

शत्रुगुण वने आय पदमावनिथे ॥

सनिथे० ॥ त्रिकोटी दिवता सय २

सनिथे ॥ ज़ानिस चांनेस जयजय

कार ॥ प्रकारन जुबवंन सत्य

हाथ यनिथे ॥ सनिथे ॥

ॐ

दीविथि वय करान पोशन फतिये ॥
राज़ु ऊमाई करि पोशि पूजा ॥
पोरस पोश लागय कुजुल्य नील्य वतियेः
सतिये० ॥ दीवता प्रन्य 2 वुछान वय
यथि ॥ लाधि बोय गंग० यस मंग
नोवुरव ॥ लाछे बोज लाछी कस टिक
ब्रन्ट्य न पांतिये ॥ सतिये० ॥
लक्षमी त हीरी प्राय परबतिये ॥
अष्टा दश बोज सान करान ॥
चक्रीश्वर वरने प्रोय मंग वातिये ॥
सतिये० ॥ दशि नाव थलि वेल
वोनुय सतिय ॥ वशिष्ठ मंग ॥

ॐ

यँथ्रा यल हवच द्राव ॥

परञ्यदार ब्रह्मण नय योहर न फनिवे॥ सनिथे०॥ मंज़ुम योर मोहर मंग्रि म्राबय ननिये॥ दक्षिना देन पिजि कोरुम याद॥ नन्द गोर दूद म्रयम्राय यनिवे॥ सनिये०॥ प्रकाशि चाने गटु गज यनिये॥ श्रीराम प्रासि वुन दपुंपिहाव। म्रन्दुकार वुन्द निश। कास भगवनिये॥ सनिथे०।

ॐ

तु तु

वन्दुयो गौन्य कु पादन ।। क्रौ

कांडयो राम रादन

व्यवार नांग्य वति लारया ।।

नुन राकि तार प्रारया ।।

ब्रह्म सर किन दि मयका ।।

कांडयो० ।। प्रवचन दून्द गया

म्योनुय । खुश यि वुन नन्द

बोनुय ।। नांल्य शान्य हिये

ना ।। कांडयो० ।।

ॐ

कशि नीर तोयपमंग्य।। लपि कम।
नारन यिह। श्रशि पोयनि हरूम
नन।। कांडयौ०।। मालिशि किन
छिमयो।। हर मुख वंन
दिमयो।। हसदार गकित रट वन।।
कांडयौं०।। व रुदहम कय शाये।।
क्रीक नदी वुद बु लायै।।
मंग केन युन बु श्रा... ।।
कांडयौ०।। गोम ना कैह
म्यं चोनुय।। दयव यलि
... ।।

ॐ

चार नी लान वादून॥ छांड्यो०॥

चुजि गोरवो म्यनिशि दूर ॥

त्रिजि त्यलि यलि गछ्यम

सूर॥ चुजि पोन नाग

राटून॥ छांड्यो०॥

वाव तन वाव कीन॥वाव

सीर ... सीन॥ ...

... गुरव पान हाटून॥ छांड्यो॥

... यपन ...

राम राम करव बु त्रावय ॥ त्रहव

दिजि द नावन छाडुवो ॥ न्यत्रन

मंडु रटय पाट बुथ्य थोडि किन

दिमय नाद् मस्यो वुनि

छुआदन छाडवो ॥ नारायना

नाग प्रारथ बागट नाय

कारय ॥ प्रारथ सन्य

सादन ॥ कांडयो ॥

सिर्यस कु गाप

पोनुय ॥

ययकु प्रमा पकाण ॥

सुय कुस यूज सादन ॥ कांड्यो
कौसल्याय

कौसल्याधि हृन्दि गोबरो ।। करयो
गूर गूर ।। परोयो राम राम ।।
करयो गूर गूर कोतु गोहं ... ...
कस हमक हाल बाविच ।।
... कुस मनु नाविच ।। करयो
... पोत ... ।। ...
... वु ... ।। नारस ... बु
... ।। ... ॥

ॐ

नानन दय नाव नाने ।। श्री कृष्ण
महाराजे । जगत्तु का व्रज च राजे ।।
कार्यो० ।। फेरहया अन्दि अन्दी
लागय पोषि गन्दी ।।
जाम चान्य अन सन्दी ।। कार्यो० ।।
नोल चोन व्रुन म्य अांमो ।।
कार्यो शोहर गामो ।। यसि
गूक दृम च रामो ।। कार्यो० ।।
ने हा बाजारी ।। [illegible]
लुरव सारी ।। पान नगन
पांरी ।। कार्यो० नेरमे ।। रिपती ।।
लागयो कारिपती ।।

ॐ

तारि दिल गोम गती ।। करयो०।।
ब्य कथो शाप आंसी ।। तिम ति
कोन कांसि कासी ।। च गोहम
वन वोसी ।। करयो०।। च्य पूर्यचम
बुरजु जामय ।। बु काय पोहर
गामय ।। परयो ।। राम राम । करयो०।।
लुलि मंज लुल नानय । ति
मंज बु सोवय ।।
चुन तिन कांपि हावय ।। करयो०
नेरयो पाम लटे वार

याज क्रिय व्यउँ मेटे ।। गाषा

लाल त्रेते ।। करयो०।। दूर्यर नी

ब चालय ।। कूसू करयस हवालय

लाजयस माथि जालय ।। करयो०

प्रकंचन हुन्द गाषा कौत गोम ।।

सिर्य प्रकाश कौत गोम ।।

केंह ति क्रेम न गाषा कौत गोम ।।

करयो०।।

क र यो०।। कौद ने

त छ ह त

ॐ

मपारिय माल मौज मांरि रिव
च्यं सारी ॥ रात जुव लगाय
पांर्य्थ पारीये ॥ मकु रप ॥
थॊलि प्रारव कम श्रवतारीं ॥
श्रमृत जल सांपुन जारी ॥
बुत राय रवांरायन वरीह ॥
श्रवतारी ॥ राम० ॥
हारनि पयप कयाह श्रोर
बाड़ अहंकारी ॥ प्रह्लाद बारि
वारनि लोग जारी ये।

ॐ

नरसिंह दोरुथ क्य न्यराकारी ॥

राम० ॥ बलिदानस ब्र प्राव

वामन् अवतारि ॥ बु तरांव तल

गव सु स्वांरीये ॥ वुल पच

चोनी दू वापारी ॥ राम० ॥

भार्गव राम यलि प्रास्वअवतारी॥

स्वोली सागुन तीर नारी ये ॥

तम्य तीर सत्य कृत्य स्वतव्य

मार ॥ राम० ॥ ...

चातुर बुज चरी ... ...

कुल ... प्रासबुन स ...

ॐ

ंव आरव कामदीन राम अवतारी।।

राम०।। कृष्णरूप चौलि आख

परवुपकारी ।। गूकालक्य मुर०न

ंव सारीये ।। कम्सासर साम्पु

सम्हारी ।।रा०।। च्यीट र लाजिन

बुद्ध अवतारी कामि योगक्य

गाकन [illegible] फतारी वे।।

दृशुन कर्नि यिन दीवता

सा[illegible] ।। राम०।। गार गीर

[illegible] [illegible]रा [illegible]र ।।राम०

[illegible]लारी

[illegible]

ॐ

लागयो पोशशेर ॥ राम चन्द्रह

चानि वेरे ॥० पांचभूत क्रियान्य

मने ॥ वातान कुरव च़ हानि हनै॥

मन मंज़ आस्रव न वनै ॥ राम चन्द्र०॥

अज्ञान कुम म्यं मने ॥ काम क्रोद

लूरगने ॥ व्याधन चोनि मनि

सनै ॥ राम चन्द्र०॥ प्राण रूप राम

जुव ॥ पानणि रूप ज़न [illegible] ॥

भूमि ॥ बार आरव कामना ॥

राम चन्द्र०॥ शाप युत

ॐ

म्य वरयाहनाः यंद्राज़ चाव करान।।
पाप संत्य गंयि सु प्रार्ण।।
राम चन्द्रः।। शाप च्युतनय द्राजस।।
दीवन हर्विस।। राजस। न्नूब
गोय न्य काम वेलू।।रामचन्द्रः
थ्यि लूब चारव् मकानस।।
तिम सास गौंमि च्य पानस।।
वंरयन पननि बेरे।। राम चन्द्रः।।
सास न्यं तन ब. तस वनेंय।।
दीवन प्यठ सु नव्यन।। रथगय
वुछ् नेरे।। राम चन्द्रः।।
स्यंतन पंजम गय।

ॐ

हावतम पनानि वत ।। शाप वोल मो

पाच वेरे ।। राम चन्द्र ।।

ब्रह्म चानि गछूय ।। ज़ीवन

करनि सचूय ।। यण्ण रूप कण्ण

वेरे ।। राम चन्द्र ।। शिव रूप

कोरथ ज़ाये ।। जय कार

प्रह्लयादे ।। रवोरयन

विण्ण भाये ।। राम चन्द्र ।।

घुत यस छु दर्शनु ।।



अमृतस्वरूपानुयस्य।। कासतम्यानूनि ।।

ग्रोनुयस्य।। रामचन्द्रमानन्त चोनकुस

ज़ानेस्य।। क्या ओसुम्यलानेस्य।।

भूमिबार कास वुने।। रामचन्द्र०।स्य।

जयकर गोम्य छ्याशिसा।स्य। अहल्यायि

हन्दिस ओशिसा।स्य। प्रकाश चानि वेरे।।

रामचन्द्र०।स्य।राजदुलारि रेवरस्य।।२।।

आपुश कनि जोयि २ रूप कुस

बुहारान।। सीता रामस चन्द्रस

प्रारानकुय हापुरनार गोन्डथम

पव ओस वारान पापिकोहन

हन हन नार नारगय चारह कर

नारह तारि चन्दन त तारन।।

सीतागारय छुरव ...

सैस्त वाहित्ति स्यह सारन्य कय
प्रारा म्याज गह नस पय। वय
जिन्दह करन वय छुरव मारान।
सीता०॥ वत वान वु छ्रान पतह२
तारान। हसाहुनन तु मरहनुक
त्रावियं बय बुडिना होतह
नार रज़ि पान रवारन ॥ सीता०॥
तन नारह दज़ान यनह कीन
ब क़ह ह क़ारान। वनह कस
सनह गोत्र प्रकान चोन पय।
कयनह गंया ज़िगहरस
वनि क़स बु यारन। सीता०॥

ॐ

प्रकाशि ननि आर्कि कुय कुसबुदारना

कूठ गाछि तुलुन बारम्युठश्रासि

मयम ज़्यूठज़ानसंसारमनहसुर

नीराणम सा॥ सीताम॥ २

भाव बहा बोलु कुनबुलो सोन कुनो

करय शांदी द्राव कठ चोश

ग्राज़ि पनकलो। ज़र वलुनव

वुन्द की दांदी कुनु न्यन्द्रतवुनि

कय मुलो। सोना काव कुमरीव

पोश कुलो। श्राव ननन ज़

कांर्यमांदी नाव वुनुयगा

रास तुलो। सो॥ राज़दनु

ॐ ॐ

नाव छ्यियतन नेर सुमुलो। छ्य
ज़मीनि खतिथ्राज़ोदी। व्यालु छ्य
कथ यम्बरज़लो। सो छाव दर्शनि
प्रासन्त्यर मलो। किय म्योगोमत्य
लोलन लोदी पशिरा करान
कुयकुत कुमो। सो। चावसोन्त
तय नबगाव खुतो बुतराच़
प्याठ चोल फसादी। येकबटचन
यिरन्थुम फुलो। सो। नावमन
तन ब्रावज़ल ज़्तो द्राव शुहुल
चोन कमिन गराद्दी। [illegible]

ॐ १

पर बन बसू तुल मुलो। सो॰।
कावस्त्र के पोश लकि ना। बे गुलो।
कर रव बर दित बक स्यांज। दोदी।
वाकय फांजिल बो जडांबलो। सो।
हाव प्रकाश। गाश। हो फुलोइ
सिर्य नकिर मनांदी। कमनथिवान
रातसजु लो। सो॰॥ राजदूनार
परयो लोल यिकि रामह रामह।
मोरोंश। शामम सुन्दरो
बरयो लोल मस्की प्यात।
चल मो राम चंदारो॥
मरयोलोल यिकि रामह
जो रो॰

ॐ

थिकयो कुतरात चहक स्नुनव (
मोदिस दवड गनुस मार। थिकयो
तन चहक सजामन मोरोन।
चह कुसो हिथि अन्दर दानह।
थिकयोपानह यांवरजन ।। करन्या
वर कयथ मरवाम ।। मोरोन।
चहकसो सिथ्यथि बोजून ।। २।
दूथिरचो नकुकसनून ।। पथ
चालिगोस मंदिन्यन छ ।। म ।।
मोरोन ।। च चह कसो
मालि क हन्द नन्दु को

यि छुयो जान मीराजस॥ लाति
श्रोसन यी नेकि पूर त्राम॥मोरेम
दीशारावनुरस गोम बहान कु
श्रोसुस पानह पारी जात।
कवह जानह दयस खुष
नयान्नाम।मो रो०।हुज
पारीर वार।प्रावारह
कीर्यम मालिने वुनि कम
दुद चवान दामह दामह।मो
रो०।श्रोसुसे लानि द्राव
त्रानि म कर्पइलानि

लोग्रख नम यी । टोपन म
तस ची य्य होक्ह मा । गड़ेमस
केल्य कुत्याम्म कुंहि ।। टुप्योम
जुहह व्ययस ना छोहर ग्येवतन
किनह कुनि गाम ।। मो रो
अद्रतीक बागि आगी हागि ।
व्यय फतह हागि चुजु ह त दास ।
पास कर पितयनि दि नमा
पामह । मो री । हरान आणिय आदि
जोयि । हरान सत्य सीन है
खुद्या पुंवन रामग रुप आदीन
डेक वन मंड राबुरा आस ।
केनरियच रि नियन त

वूगाहहाप गोसे बे आरामहि
मो रोन। रि वान मुल्य तसयांहि
तूस ॥ प्रकाश गोस अयं निरग
सन गोस सग तसे तन तस
त्रामह ॥ मोरो॥ चोतुर बुज
चोतुर बुज। विण्या रूप नारामो
प्रार कोत ब्रुहमो कारानो
जांग हन्दि राज भी भगवाने
मथ शीव जांच मंग कुस आसे
कार तम विग कुस बु ॥
[illegible]नो। प्रार बागस बु
[illegible] फेरानो। अकि पोष
[illegible]सारस

[illegible]

ॐ

यह अक्षर ठीक नहीं है!

रावुन म्य श्राम वि...दाराना
प्रार। श्रोकरव्य ह्वय गी.. दीयानो
। तन वेश्या तमि सूत्य लसानो।
मन असं राग राम पराना प्रार०
कानन मंज़ कर्नम कनवानो।
नरमन कोन छुरव बोज़ानो।।
कुन सत्य चंचित गव दज़ानो।
प्रार०॥ जटायन घास नाल .. ानो
राक्षस कोन छुरव च जानानो।
यि च पनुन पान गालानो।
।प्रार०।। नय छुरव कर्म हा...
कामानो नय छुरव जग ...व ...

...प्रार०...

ॐ

रसिस ... दगोम वकानो

नु आसस वागस पकानो

वन मंज ... थलि गोस च नारानो

प्रार० प्रथ मनस मंज चुख च आसानो

प्रकाश गट चुख च कासानो

नरकनि नार तार तारानो प्रार०॥

ली ... स्य कर होय पोशि॥

...न॥ श्री राम आसि हावि॥

... पुन ... मन किस बागस

... न्यून बोव। ...

... नाचतम। न्यमि...

... आस ... स...

याविं बेर्यर श्रस्य श्रामि सत्रा। सि गारन
श्चारन 2 प्रय जाये। सत वाते सोनि
चयथलय गारन। श्रीराम०॥२
दीदती श्रासित रफ श्रीस्य दारान।
जन मस चानि पुक्य योतयिवान॥
तन मन मन तनयिवि सत्य गरने।
तीरदिय वांली कुस
श्रीरम व ॥ कोत्य न
श्रीरावर श्रारन॥
वालन व रेंठमन जा
तेम्य सन्दि बीम सत्य
कुस न श्रारन॥ श्रीरा
मनकिम वावय ईश्व
राभय

ॐ

...यु स वोती तस गव लारान ।

...श्रीराम०॥ कोहन वोविथ लोगुन

गयरत् वोथि बा...र वोली

फीरित द्राव॥ तान पु...य

कारान तन वुम मारन॥

...राम०॥ ह्य गोम तारा...

...स कोह सारन॥

तसन्दि स...

...न कु...

...ईश्वर...



राम च यथ
लागय पोरस श्री
चय छुक ब्रह्मा विष्णु वोनमय
कारन ॥ श्री राम० ॥ प्रकाश वोनी
प्रकाशय आबन ॥ प्र- [illegible] ह [illegible]
गर [illegible] प्रकाशि सत्य प रामह
चव । छु । प्रकाप [illegible] ॥
[illegible] रा ०॥ राज लाग [illegible]
होरिय बोज पोशा [illegible]
चारो । श्रोपे रस्या [illegible]
गय छु श्राव दा [illegible]
हृदय रवछन [illegible]
न [illegible] गोज [illegible]